विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

आने वाला समय कृत्रिम बुद्धि के वर्चस्व का है!

सृजन की दुनिया पहले ही काफी फिसलन और विचलन भरी थी। हम आए दिन यह देखते-पढ़ते सुनते रहे हैं कि अमुक रचना, चाहे वह कोई लेख-कविता-कहानी हो, कोई धुन हो, कोई छवि हो, कुछ भी हो, अमुक मूल की हूबहू नकल है। संगीत की, विशेष रूप से लोकप्रिय संगीत -बॉलीवुड संगीत- की दुनिया में तो ऐसा करना बहुत आम रहा है। वहां कहानियां ही नहीं, पूरी की पूरी फ़िल्में ही कहीं अन्यत्र से फ्रेम-दर-फ्रेम उठा कर हमारे सामने रख दी गईं। कवियों-शायरों ने औरों के कलाम अपने नाम से हमें सुना कर वाहवाही लूट ली। अगर बहुत पीछे न भी जाएं तो कहानियों के मामले में हुए अनेक ऐसे प्रकरण आपको भी याद आ जाएंगे जहां किसी अन्य कहानी के अनेक अंश शब्दशः प्रयुक्त कर लिये गए और जब पकड़े गए तो बहाने बना कर बच निकलने की हास्यास्पद कोशिशें की गईं। वैचारिक लेखन की दुनिया में भी ऐसा खूब हुआ है। आप एक लेख पढ़ने लगें और पाएं कि एक पैरेग्राफ़ के बाद भाषा-शैली एकदम अलग हो रही है तो संदेह होना स्वाभाविक ही है। आजकल तकनीक के कारण यह पकड़ पाना कि कोई पैरेग्राफ कहां से उठाया गया है बहुत मुश्क़िल भी नहीं रह गया है। लेकिन इसके बावज़ूद अति महत्वाकांक्षी किंतु प्रतिभा विहीन लोग ऐसा करने से बाज़ नहीं आते हैं। अकादमिक दुनिया भी इस उठाईगिरेपन से अछूती नहीं है। यह चर्चा आम है कि पूरे के पूरे शोध ग्रंथ इसी कला से रच दिये जाते हैं और लोग डॉक्टर बन जाते हैं। और हां, आप कला शब्द के प्रयोग पर आहत अनुभव न करें। हमारे यहां चोरी को चौंसठ कलाओं में से एक माना गया है।

चोरी को पकड़ने में तकनीक के उपयोग का ज़िक्र मैंने किया। विश्वविद्यालय तो आजकल इस निमित्त अनेक सॉफ्टवेयर्स और टूल्स का प्रयोग अनिवार्यतः करने लगे हैं। हमारा समय कृत्रिम बुद्धि के प्रसार का समय है और इसके माध्यम से भी बौद्धिक चोरी पकड़ने के अनेक प्रयास होते रहते हैं। लेकिन मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ और काफी चिंता भी हुई कि अब कृत्रिम बुद्धि आपके दिये हुए संकेतों को ग्रहण कर आपके लिए सृजन भी कर सकती है। क्या यह बात आपको चकित नहीं करती है कि अब आप इस कृत्रिम बुद्धि को कुछ चरित्र दे दें, उनकी विशेषताएं और कुछ घटनाएं बता दें तो और यह निर्देश दे दें कि इनको मिलाकर इतने शब्दों की एक कहानी तैयार कर दी जाए, तो आपके आदेश की पालना कर जाएगी। पलक झपकते ही एक कहानी आपकी सेवा में पेश कर दी जाएगी! असल में ऐसा हो भी चुका है। सन 2020 में लेखकों-कवियों के एक समूह ने चैटपीजीटी नामक एक एआईटूल को क्लासिक कविताओं के मॉडल पर प्रशिक्षित किया और फिर उससे नई कविताएं लिखवाईं, जो न केवल निर्दोष थीं, बेहतरीन भी थीं।

वैसे एक हद तक यह काम काफी पहले से हो रहा है। अब आप अनुवाद की ही बात लीजिए। एक भाषा के सृजन को दूसरी भाषा में बदलने का काम बहुत कठिन होता है। लेकिन कृत्रिम बुद्धि ने इस काम को बहुत आसान कर दिया। बेशक मनुष्य द्वारा किया गया अनुवाद जितना सटीक होता है, कृत्रिम बुद्धि द्वारा किया गया अनुवाद उतना सटीक नहीं हो सकता, फिर भी इस बात को स्वीकार किया जाना चाहिए कि उसका स्तर निरंतर बेहतर होता जा रहा है। आज यह बहुत आम है कि आप मेरे इस सम्पादकीय को गूगल ट्रांसलेट या इसके समान किसी अन्य टूल या एप पर चिपका कर यह निर्देश दें कि इसका अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रेंच या इतालवी भाषा में अनुवाद कर दिया जाए, और लगभग रियल टाइम में वैसा कर दिया जाएगा। हममें से बहुत सारे लोग आपात स्थिति में इस सुविधा का उपयोग करते भी हैं। यांत्रिक रूप से जो अनुवाद किया जाता है, जब उसकी नोक-पलक दुरुस्त कर दी जाती है तो वह काफी हद तक मनुष्य द्वारा किए गए अनुवाद जैसा ही होता है। अब अगर इस तकनीक से अनुवादकों के सामने रोजी-रोटी का संकट आ खड़ा हुआ है तो चिंता होना स्वाभाविक है। लेकिन शांत भाव से सोचता हूं तो पाता हूं कि रोज़गार के स्वरूप तो पहले भी बदले हैं और निरंतर बदलते रहते हैं। बहुत सारे पुराने काम अब केवल स्मृति में रह गए हैं, उनकी जगह नए कामों ने ले ली है। यह एक स्थायी और सतत ज़ारी रहने वाली प्रक्रिया है।

अगर कृत्रिम बुद्धि को ग़लत सूचनाएं दे दी जाएं तो वह उन्हीं के आधार पर सृजन कर देगी, और इस बात के अनेक दुष्परिणाम हो सकते हैं। निश्चय ही कृत्रिम बुद्धि का त्वरित विकास जहां हमारे लिए अनेक सुविधाएं रचेगा वहीं यह मानवता के लिए बहुत सारी चुनौतियां भी लेकर आएगा। यह तो समय ही बताएगा कि हम उन चुनौतियों से बचते हुए इस सुविधा का कितना और कैसा उपयोग कर पाएंगे।

लेकिन, विचारणीय यह है कि क्या कृत्रिम बुद्धि के बढ़ते कदम लेखक-सर्जक को भी विस्थापित कर देंगे? एक उदाहरण से शायद बात अधिक स्पष्ट हो। कृत्रिम बुद्धि के ऊपर उल्लिखित भाषा मॉडल प्लेटफॉर्म पर जाकर मैंने यह अनुरोध किया कि समय की चुनौतियों पर लगभग तीन सौ शब्दों की एक टिप्पणी लिख कर दो। उसने लगभग तुरंत जो लिखकर जो दिया, वह बिना एक भी संशोधन के आपके सामने रख रहा हूं: *समय की चुनौतियों से सम्बंधित लेख लिखना कठिन काम है। समय की अंतराल को पलटने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है, साथ ही काम के साथ समय को संयोजित करने की कुशलता की आवश्यकता होती है। समय को संवेदनशील रूप से प्रबंधित करने से हम अपने काम को सफलतापूर्वक पूरा कर सकते हैं, साथ ही जीवन की अन्य कुछ महत्वपूर्ण कार्यों को भी ध्यान में रख सकते हैं।* यह समझा जा सकता है इस प्लेटफॉर्म ने मेरे अनुरोध को समझने में चूक की। मैं समय की चुनौतियों पर लिखवाना चाहता था, उसने समय प्रबंधन की चुनौतियों पर लिख दिया। लेकिन जो लिख कर दिया, वह औसत से बेहतर ही था। मैंने एक और प्रयोग किया। इस बार इस प्लेटफॉर्म को निर्देश दिया कि पिताजी के लिए एक श्रद्धांजलि लिखो। लगभग दस सेकेण्ड में मुझे यह श्रद्धांजलि प्राप्त हुई: *पिताजी, आपने हमें सब कुछ सिखाया है। आपने हमें अपनी शक्ति, संवेदनशीलता, और प्यार से पूर्ण किया। आपके संदेशों को ध्यान में रखते हुए, हम अपने जीवन में सफल होंगे। आपको हमेशा याद करेंगे और आपकी श्रद्धा से हमेशा प्रेरित रहेंगे। आपको धन्यवाद।* मैं बताता चलूं कि इस बार प्लेटफॉर्म ने एक ग़लती भी की। उसने सिखाया को सीखाया लिखा। इस बार मैंने एक अपेक्षाकृत कठिन विषय इसे दिया। मैंने कहा कि मुझे जीवन का सौंदर्य विषय पर कुछ लिख कर दिया जाए। जो मिला वह शब्दशः इस प्रकार है: जीवन का सौंदर्य हमेशा बदलता रहता है, कुछ समय के लिए यह स्वस्थ रहने से होता है, कुछ समय के लिए परिवार से, कुछ समय के लिए प्रेम से और कुछ समय के लिए सफलता से। हम सभी को अपने जीवन के सौंदर्य को खोजने की ज़रूरत है, जो हमेशा हमारे साथ होगा। मैंने कोई बीसेक विषय इसे दिये और इसने हर बार मेरे आदेश का पालन करते हुए ठीक ठाक उत्तर लिखकर दे दिये। यह कम चकित करने वाली बात नहीं थी। यहीं यह भी बता देना ज़रूरी है कि कृत्रिम बुद्धि के ये टूल कॉपी पेस्ट न करके नया रचते हैं। इसलिए एक तरह से कहा जा सकता है कि यह मौलिक सृजन होता है।

सोचने की और चिंता करने की बात यह है कि निरंतर विकसित होती हुई कृत्रिम बुद्धि क्या निकट भविष्य में हमारे रचने के काम को अप्रासंगिक नहीं बना देगी? हम देखते हैं कि विभिन्न सामयिक प्रकाशनों में पहले जो लेख आदि विभिन्न लेखकों से लिखवाए जाते थे अब उनकी जगह इण्टरनेट से ली गई सामग्री का प्रयोग आम हो चला है। मैं उस भविष्य की कल्पना करता हूं जहां इसी तरह कृत्रिम बुद्धि द्वारा रचित कविताएं, कहानियां, लेख आदि हमारे लेखकों और विचारकों को विस्थापित कर चुके होंगे! क्या वास्तव में ऐसा होगा? कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग विद्यार्थी अपने गृह कार्य को करने में कर सकते हैं, करने भी लगे हैं। इससे उनकी प्रतिभा का स्वाभाविक विकास अवरुद्ध होगा, यह कहना अनावश्यक है। निश्चय ही जब ऐसा होने लगेगा तो पढ़ाने और परीक्षा लेने के तौर तरीकों में बदलाव ज़रूरी हो जाएगा। अगर कृत्रिम बुद्धि को ग़लत सूचनाएं दे दी जाएं तो वह उन्हीं के आधार पर सृजन कर देगी, और इस बात के अनेक दुष्परिणाम हो सकते हैं।

निश्चय ही कृत्रिम बुद्धि का त्वरित विकास जहां हमारे लिए अनेक सुविधाएं रचेगा वहीं यह मानवता के लिए बहुत सारी चुनौतियां भी लेकर आएगा। यह तो समय ही बताएगा कि हम उन चुनौतियों से बचते हुए इस सुविधा का कितना और कैसा उपयोग कर पाएंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसादअग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा के उद्घोषक नेताजी

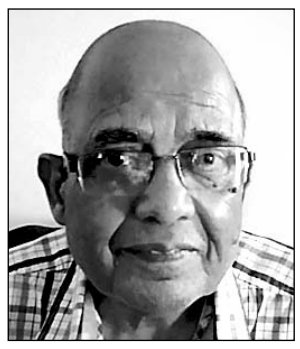

डॉ. जे. के. गर्ग

जन जन के नायक महान स्वतन्त्रता सेनानी नेता जी कहते थे कि राष्ट्रवाद मानव जाति के उच्चतम आदर्शों सत्यम, शिवम, सुन्दरम से प्रेरित होना चाहिये। उन्होंने हमें अपने जीवन में सदेव आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी थी चाहे हमारा सफर कितना ही भयानक, कष्टदायी दुखी और बदतर हो। सुभाष बोस ने हमें संदेश दिया था कि सफलता, हमेशा असफलता के स्तंभ पर खड़ी होती है। जो अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं, वो आगे बढ़ते हैं किन्तु उधार की ताकत वाले घायल हो जाते हैं। नेताजी ने बतलाया कि मेरा अनुभव है कि हमेशा आशा की कोई न कोई किरण आती है, जो हमें जीवन से दूर भटकने नहीं देती। नेताजी बार बार बोलते थे कि अन्याय और अपराध को सहना और गलत के साथ समझौता करना है सबसे बड़े पाप हैं। भारतीयों का कर्तव्य है कि हम अपनी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएं।

हमें अपने बलिदान और परिश्रम से जो आज़ादी मिले, हमारे अन्दर उस आजादी की रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए। एक सैनिक के रूप में आपको हमेशा तीन आदर्शों को संजोना और उन पर जीना होगा ये आदर्श हैं सच्चाई, कर्तव्य और बलिदान। जो सिपाही हमेशा अपने देश के प्रति वफादार रहता है, जो हमेशा अपना जीवन बलिदान करने को तैयार रहता है, वो सिपाही अजेय है। अगर तुम भी अजेय बनना चाहते हो तो इन तीन आदर्शों को अपने ह्रदय में समाहित कर लो।

आजादी के आन्दोलन क्ले समय नेताजी बोलते थे कि "हमारे अन्दर बस एक ही इच्छा होनी चाहिए, मरने की इच्छा ताकि भारत जी सके! एक शहीद की मौत मरने की इच्छा ताकि स्वतंत्रता का मार्ग शहीदों के खून से प्रशस्त हो सके।" "मुझे यह नहीं मालूम की स्वतंत्रता के इस युद्ध में हममें से कौन-कौन जीवित बचेंगे! परन्तु में यह जानता हूँ, अंत में विजय हमारी ही होगी भारत में राष्ट्रवाद ने एक ऐसी सृजनात्मक शक्ति का संचार किया है जो सदियों से लोगों के अन्दर से सुसुप्त पड़ी थी।" "मेरे मन में कोई संदेह नहीं है कि हमारे देश की प्रमुख समस्याओं जैसे गरीबी, अशिक्षा, बीमारी, कुशल उत्पादन एवं वितरण का समाधान सिर्फ समाजवादी तरीके से ही की जा सकती है जीवन में प्रगति का आशय यह है की शंका संदेह उठते रहें और उनके समाधान के प्रयास का क्रम चलता रहे" "हमारी राह भले ही भयानक और पथरीली हो, हमारी यात्रा चाहे कितनी भी कष्टदायक हो, फिर भी हमें आगे बढ़ना ही है! सफलता का दिन दूर हो सकता है, पर उसका आना अनिवार्य है!"

"सुबह से पहले अँधेरी घड़ी अवश्य आती है! बहादुर बनो और संघर्ष जारी रखो, क्योंकि स्वतंत्रता निकट है!"

"मैं जीवन की अनिश्च से जरा भी नहीं घबराता! मुझे जीवन में एक निश्चित लक्ष्य को पूरा करना है! मेरा जन्म उसी के लिए हुआ है! मुझे नेतिक विचारों की धारा में नहीं बहना है! भविष्य अब भी मेरे हाथ में है!"

"मेरे जीवन के अनुभवों में एक यह भी है! मुझे आशा है की कोई-न-कोई किरण उबार लेती है और जीवन से दूर भटकने नहीं देती!"

"हमें केवल कार्य करने का अधिकार है! कर्म ही हमारा कर्तव्य है! कर्म के फल का स्वामी वह (भगवान) है, हम नहीं!"

"जिस व्यक्ति में सनक नहीं होती, वह कभी भी महान नहीं बन सकता! परन्तु सभी पागल व्यक्ति महान नहीं बन जाते! क्योंकि सभी पागल व्यक्ति प्रभावशाली नहीं होते! आखिर क्यों? कारण यह है की केवल पागलपन ही काफी नहीं है! इसके अतिरिक्त कुछ और भी आवश्यक है!" याद रखें अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना सबसे बड़ा अपराध है एक सच्चे सैनिक को सैन्य और आध्यात्मिक दोनों ही प्रशिक्षण की ज़रुरत होती है।।

जी अक्सर कहते थे कि सफलता हमसे दूर जरुर हो सकती है किन्तु वह दिन अधिक दूर नहीं जब हम भी सफल होंगे। याद रखिये कि जीवन में सफलता का आना अनिवार्य ही है। नेताजी के मुताबिक माँ का प्यार सबसे गहरा और है स्वार्थ रहित होता है। माँ के प्यार को मापने का कोई पैमाना हो नहीं सकता है माँ की ममता और प्यार को किसी भी तरह से मापा नहीं जा सकता। नेताजी ने हमको समझाया कि हमारे देश की प्रमुख समस्याएं गरीबी, अशिक्षा, बीमारी, कुशल उत्पादन एवं वितरण सिर्फ समाजवादी तरीके से ही की जा सकती है।

आजाद हिन्द फौज के प्रणेता क्रांतिकारी जन नायक सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक के निवासी जानकीनाथ बोस प्रभावती के यहाँ हुआ था। सुभाष 14 लड़के-लड़कियों में से नौवीं संतान थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कटक में रेवेनशा कॉलेजिएट स्कूल में हुई। उन्होंने कलकत्ता यूनिवर्सिटी से 1919 में बीए की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की थी इस परीक्षा में उन्हें यूनिवर्सिटी में उन्हें दूसरा स्थान मिला था। 1920 की आईसीएस परीक्षा में उन्होंने चौथे स्थान मिला। सुभाष का मन अंग्रेजों के अधीन काम करने का नहीं था इसलिए उन्होंने से एक साल के भीतर 22 अप्रैल 1921 को त्यागपत्र दे दिया क्योंकि उनके दिल अंग्रेजों की गुलामी और भारत माता का आजाद करने का जुनून था।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की सलाह के अनुसार भारत वापस आने पर वे सर्वप्रथम बंबई गये और गांधीजी से मिले। वहाँ 20 जुलाई 1921 को गांधी जी और सुभाष के बीच पहली मुलाकात हुई। बहुत जल्द ही सुभाष देश के एक महत्वपूर्ण युवा नेता बन गये। नेहरूजी के साथ सुभाष ने कांग्रेस के अंतर्गत युवाओं की इण्डिपेंडेंस लीग शुरू की। 1928 में जब साइमनकमीशन भारत आया तब कांग्रेस ने उसे काले झंडे दिखाये। कोलकाता में सुभाष ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। साइमन कमीशन को जवाब देने के लिये कांग्रेस ने भारत का भावी संविधान बनाने का काम आठ सदस्यीय आयोग को सौंपा। मोतीलाल नेहरू इस आयोग के अध्यक्ष बनाये गये सुभाष बाबू को इस आयोग का सदस्य बनाया गया। 1930 में जब कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर में हुआ तब इस अधिवेशन के अन्दर तय किया गया कि भारत में 26 जनवरी का दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

अपने सार्वजनिक जीवन में सुभाष को कुल 11 बार कारावास का दण्ड मिला। सबसे पहले उन्हें 16 जुलाई 1921 में छह महीने के लिये क्रष्ण मन्दिर जाना पड़ा। 1930 में सुभाष कारावास में ही थे कि चुनाव में उन्हें कोलकाता का महापौर चुना गया। इसलिए सरकार उन्हें रिहा करने पर मजबूर हो गयी। वे जब कलकत्ता महापालिका के प्रमुख अधिकारी बने तो उन्होंने कलकत्ता के रास्तों का अंग्रेजी नाम हटाकर भारतीय नाम पर कर दिया।

1934 ई. में सुभाष अपना इलाज कराने के लिए ऑस्ट्रिया गए थे। उस समय उन्हें अपनी पुस्तक टाइप करने के लिए एक टाइपिस्ट की जरूरत थी। उन्हें एमिली शेंकल नाम की एक टाइपिस्ट महिला मिली। उन्होंने से सन् 1942 में बाढ़ गस्टिन नामक स्थान पर हिन्दू रीति रिवाज के अनुसार एमिली शेंकल से विवाह किया। एमिली शेंकल से उनको पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम अनीता रक्खा। सुभाष ने उसे पहली बार तब देखा जब वह मुश्किल से चार सप्ताह की थी। 1938 में हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए चुना गया। इस अधिवेशन में सुभाष का अध्यक्षीय भाषण बहुत ही प्रभावी हुआ। । 3 मई 1939 को सुभाष ने कांग्रेस के अन्दर ही फॉरवर्ड ब्लाक के नाम से अपनी पार्टी की स्थापना की।

–डॉ. जे. के. गर्ग,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

सामोद गांव में तीन बेटियों ने पिता के शव को कंधा दिया

चौमूं/कालाडेरा, (निसं)। हिंदू रीति रिवाज के अनुसार बेटियां और महिलाएं श्मशान में नहीं जाती, मान्यता यह भी है कि बेटा न होने पर भी बेटियां पिता की अर्थी को कंधा या मुखाग्नि नहीं दे पातीं। लेकिन चौमूं उपखण्ड के सामोद गांव की तीन बेटियों ने इस मान्यता को तोड़ा है।

गांव के रामधन सेठी ने पशु चिकित्सा विभाग में काम करते हुए बेहतर कार्यकाल के साथ रिटायरमेंट लिया। कई सालों बीमार रहने के बाद रामधन का रविवार को आकस्मिक निधन हो गया। जिसके बाद परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। रामधन का कोई बेटा नहीं है उनकी तीन बेटियां सबसे बड़ी तारा, दूसरी निरमा एवं सबसे छोटी बेटी सोना ने रामधन सेठी की मृत्यु के बाद पिता के शव को श्मशान तक कंधा दिया। बेटियों ने न सिर्फ कंधा दिया, बल्कि श्मशान जाकर उनको मुखाग्नि भी दी। रुंधे गले, बहते आंसुओं के बीच समाज की भ्रांतियों

चौमूं उपखण्ड के गांव समोद में बेटियों ने पिता के शव को श्मशान तक कंधा दिया।

- **तीनों बेटियों ने श्मशान जाकर पिता के शव को मुखाग्नि भी दी**
- **पशु चिकित्सा विभाग से सेवानिवृत रामधन सेठी का निधन हो गया था**

और बेड़ियों को तोड़ते हुए बेटियों ने साबित कर दिया कि बेटे व बेटी समान होते हैं। पिता को कंधा देते देख गांव के मौजूद लोगों की आंखें नम हो गई। रामधन का अंतिम संस्कार सामोद गांव में रैगर समाज के मुक्तिधाम में रीति-रिवाज के साथ संपन्न किया गया। बेटी निरमा ने इस दौरान कहा कि हमारे भाई नहीं था ऐसे में पिता ने ही हमें कभी भाई की कमी नहीं होने दी और हाथ से हाथ मिला कर बराबरी करना सिखाया।

चार गांवों में राख के खौफ से पलायन

श्रीगंगानगर, (निसं)। श्रीगंगानगर, सोमासर, ठुकराना, फरीदसर और राइयांवाली राजस्थान के सूरतगढ़ थर्मल पावर प्लांट के आसपास बसे इन गांवों की पहचान टिब्बा गांव के रूप में थी, लेकिन अब इन्हें टीबी वाले गांव कहा जाता है। वजह है सूरतगढ़ थर्मल से उड़ने वाली राख। कोयले से रोज 2820 मेगावाट बिजली बनाने वाले राजस्थान के इस सबसे बड़े थर्मल प्लांट की राख से गांवों की जमीनों पर फसलों का पर्याप्त उत्पादन नहीं हो पा रहा। यह राख उन्हें टीबी, अस्थमा और सिलिकोसिस का शिकार बना रही है। कई मौतों के बाद अब लोग गांव से पलायन करने लगे हैं। सीमेंट कंपनियां भी यहां से राख उठवाने में नियमों का उल्लंघन कर रही हैं। इससे भी लोग बीमार हो रहे हैं। गांव सोमासर निवासी श्योनाथ (52) करीब 13 साल टीबी से पीड़ित रहे। हालत यह हो गई कि शरीर 20-25 किलो ही रह गया। सरकारी इलाज बेअसर रहा। फिर जयपुर जाकर मंहगा इलाज करवाया। इसके लिए लाखों का कर्ज भी लेना पड़ा।

फसल खराबे की जानकारी ली

मदनगंज-किशनगढ़, (निसं)। विधानसभा क्षेत्र में भाजपा युवा नेता डॉ. विकास चौधरी ने गांवों का सघन दौरा कर खेतों में पाला पडने से हुए नुकसान को लेकर जानकारी ली और बीमा कंपनी व कृषि अधिकारियों से बात कर गिरदावरी कर किसानों को मुआवजा दिलाने की मांग की। साथ ही चेतावनी दी गई की ढुलमुल रवैया अपनाने पर आंदोलन का रास्ता अखतियार करना पडेगा। चौधरी ने गांव बरना, देवपुरी, दादिया, बारोल, बेरडा, भगवतपुरा, डबरेला, रिंगरोट, बोराडा, लाम्बा, कटसुरा, दादिया सहित अन्य गांवों का दौरा कर आपदा के समय अपनी भागीदारी सुनिश्चित की साथ ही क्षेत्र में पिछले दिनों अपनों को खोया उनके घर जाकर संवेदना व्यक्त की। इस दौरान अंराई पंचायत समिति प्रधान प्रतिनिधि शैतान, रवि, भागचंद, करतार चौधरी, पूर्व मंडल अध्यक्ष गणेश रिणवा सहित जनप्रतिनिधि व ग्रामीण मौजूद रहे।

शेखासर के तनोट बस्ती में पैंथर के पद चिन्ह दिखे

बाप, (निसं)। जोधपुर जिले के बाप क्षेत्र में घटोर के महादेवपुरा व रावरा के बाद हिंसक जानवर पैंथर के पद चिन्ह शेखासर पंचायत में जयपालों की ढाणी तनोट बस्ती व सांगुरी में देखे गए हैं। रविवार सुबह खेतों में पैंथर के पद चिन्ह देखने पर ग्रामीणों ने बाप वन विभाग को सूचना दी।

जिस पर सहायक वन पाल राजूराम, हासम खां व फकरूद्दीन मौके पर पहुंचे। भोमसिंह सहित ग्रामीणों ने वन विभाग की टीम को बताया कि तनोट बस्ती में एक खेत पर रात ग्यारह बजे कृषक ने खेत में पानी दिया था। पैंथर की मूवमेंट इसके बाद हुई है। पानी की वजह से गीली हुई रेतीली जमीन में पैंथर के पद चिन्ह स्पष्ट नजर

बाप के निकट तनोट बस्ती में पद चिन्ह जो पैंथर के बताये जा रहे हैं।

आ रहे थे। बीते तीन दिनों से बाप क्षेत्र में हिंसक जंगली जानवर आने की सूचना के बाद दूरस्थ गांव ढाणियों में किसान व आमजन सर्तक है।

सहायक वन पाल राजूराम व हासम खां ने बताया कि जहां पर

- **खेतों में पैंथर के पद चिन्ह देखने पर ग्रामीणों ने बाप वन विभाग को सूचना दी**

पदचिह्न मिले हैं, उसके आसपास के खेतों की फसलों में उसे देखा पर वह नजर नहीं आया।

पांवों के निशान के अनुसार वह सिहड़ा की तरफ बढा है। वन विभाग के अधिकारियों ने आमजन से अपील की है कि घबराएं नहीं। ये मानव को नुकसान नही पहुंचाता हैं। फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले जानवरो का सफाया करने में इसका महवपूर्ण योगदान है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 23 जनवरी, 2023

माघ मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 12:26 तक, व्यतिपात योग रात्रि 1:27 तक, बालव करण प्रातः 8:36 तक, चन्द्रमा दिन 1:51 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मकर, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-कुम्भ, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग रात्रि 12:26 से आरम्भ होगा। आज चन्द्रदर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, व्यतिपात पूण्यं है। पंचक दिन 1:50 से आरम्भ होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:40 तक, शुभ 9:54 से 11:19 तक, चर 1:58 से 3:18 तक, लाभ-अमृत 3:18 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:57

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मिथुन
आप अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों टालना ठीक रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात मन में असंतोष और मानसिक तनाव बढ़ सकता है।

सिंह
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कन्या
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में योजना बनेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

तुला
घर-परिवार में कार्यों के कारण व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

धनु
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

मकर
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन का भय समाप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कुंभ
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

मीन
आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनावश्यक धन खर्च होगा।